शोध प्रतिवेदन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

निर्देशिका
डॉ० विजेता गौड़
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
प्रियंका नाराणियाँ
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना

प्रत्येक शोध प्रतिवेदन में दत्त विश्लेषण एवं विवेचन के पश्चात् निष्कर्ष निकालना अनिवार्य है। दत्त विश्लेषण एवं विवेचन की प्रक्रिया के द्वारा परिकल्पनाओं का सत्यापन होता है, जिससे वे स्वीकृत एवं अस्वीकृत की जाती है। इन परिकल्पनाओं के स्वीकृत एवं अस्वीकृत तथा दत्तों के रूझान के आधार पर ही शोध निष्कर्ष पूर्ण परिशुद्ध एवं यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना अनिवार्य है। शोध निष्कर्ष ही अनुसंधान के शैक्षिक निहितार्थ का आधार होते है।

शोध प्रतिवेदन में शोध निष्कर्ष, विवेचन, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव एक ही अध्याय में प्रस्तुत किये जाते है, क्योंकि ये सभी भाग एक दूसरे के आधार पर ही विकसित किए जाते है। प्रारम्भ में शोधकर्ता द्वारा कुछ निश्चित उद्देश्यों को लेकर कार्य आरम्भ किया जाता है तथा इस अध्याय में सम्पूर्ण शोध पर एक समग्र दृष्टि डालकर यह सुनिश्चित किया जाता है कि वह इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा है।

2 समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

3 शोध के उद्देश्य

बिना उद्देश्य के अनुसंधान का कार्य अधूरा होता हैं उद्देश्य वह बिन्दु होता है, जिस तक पहुंचने के लिए व्यक्ति नियोजित रूप से किसी भी कार्य को शीघ्रतापूर्वक करने के लिए प्रेरित होता है। प्रस्तुत शोध निम्न उद्देयों पर आधारित है –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन।
3. गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन।
5. सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत् विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का अध्ययन।
6. गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का अध्ययन।

4 प्रस्तुत शोध हेतु परिकल्पनाएँ

- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- सरकारी एवं गैर सरकारी, विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत् विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनातमकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5 परिसीमाएँ

1. समय की सीमितता व उपलब्ध साधनों के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले के मात्र 120 विद्यार्थियों पर किया गया है।
2. शोधकर्त्री के वर्तमान अध्ययन का शोध क्षेत्र जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर की कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों पर ही सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के दो सरकारी व दो गैर सरकारी विद्यालयों को शामिल किया गया है।
4. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय प्रकार के लिए 60 विद्यार्थियों को सरकारी से व 60 विद्यार्थियों को गैर सरकारी विद्यालय से लिया गया है।

   माध्यमिक स्तर पर लिंग भेद प्रकार के प्रभाव के अध्ययन क लिए 60 छात्र व 60 छात्राओं को लिया गया है।
6. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों सृजनात्मकता पर उनके आकांक्षा स्तर के प्रभावों का ही अध्ययन किया गया है।

6 अध्ययन का प्रारूप

1. **शोध विधि –** अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
2. **न्यादर्श –** अनुसंधान में न्यादर्श के लिए विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को लिया गया है।
3. **उपकरण –** अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण निम्नलिखित है –

- सृजनात्मकता परीक्षण हेतु मापनी (प्रो. रोमा पाल)

- आकांक्षा स्तर मापनी (डॉ. सरिता आनन्द)

4. **सांख्यिकी** – अध्यन में निम्नलिखित सांख्यिकी को प्रयुक्त किया गया है–

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- टी परीक्षण।

7 प्रतिवेदन लेखन योजना

लेखन कार्य के आधार पर प्रतिवेदन को तीन मुख्य भागों में विभक्त किया गया है।

1. **प्रारम्भिक भाग** – इस भाग में शीर्षक, आभार प्रदर्शन, विषय वस्तु सारणी एवं तालिका सूची को शामिल किया गया है।
2. **मुख्य भाग** – इस भाग में विषय वस्तु को परिच्छेद/अध्याय में विभक्त करके लिखा गया है।
3. **अंतिम भाग** – इस भाग में संदर्भ ग्रन्थ सूची, परिशिष्ट आदि का संकलन किया गया है।

8 शोध अध्याय

1. **प्रथम अध्याय – समस्या का प्रादुर्भाव एवं अभिकथन :** इस अध्याय में शोध प्रस्तावना पारिभाषिक शब्दावली समस्या का औचित्य, समस्या कथन, समस्या का चुनाव, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएं एवं निष्कर्ष आदि पर प्रकाश डाला गया है।
2. **द्वितीय अध्याय– सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः** इसमें शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का उल्लेख किया गया है।
3. **तृतीय अध्याय – अनुसंधान विधि प्रविधि एवं उपकरण :** इस अध्याय में शोध समस्या में प्रयुक्त विधि, प्रविधि, जनसंख्या, न्यादर्श एवं शोध में प्रयुक्त उपकरणों का उल्लेख किया गया है।
4. **चतुर्थ अध्याय – तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या** – शोध समस्या के सन्दर्भ में एकत्रित कए गए दत्त संकलन तथा समस्या के

उद्देश्यानुरूप उनका विश्लेषण, निष्कर्षों की विवेचना आदि का वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

पंचत अध्याय : सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव : इस अध्याय में सम्पूर्ण अध्ययन को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है तथा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सुझाव एवं भावी शोध संभावनाएं प्रस्तुत की गयी है।

9 निष्कर्ष

1. सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान 22.06 है व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान 22.74 प्राप्त हुआ। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मानक विचलन 3.577 व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मानक विचलन 3.624 है सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर ''टी मान'' 0.119 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शुन्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष प्राप्त होता है। कि सांख्यिकीय दृष्टि से सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके आकांक्षा स्तरके प्रभाव में सार्थक नहीं है।
2. सरकारी विद्यालय के छात्रों की आकांक्षाओं का मध्यमान 22.28 है व सरकारी विद्यालय के छात्राओं की आकांक्षाओं का मध्यमान 21.84 प्राप्त हुआ। छात्र एवं छात्राओं की आकांक्षाओं का मानक विचलन क्रमशः 3.143 व 4.017 है। छात्र एवं छात्राओं की आकांक्षाओं के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर ''टी मान'' 0.709 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष प्राप्त हुआ है। कि सांख्यिकीय दृष्टि से सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान क्रमशः 22.6 एवं 22.88 प्राप्त हुआ। गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं का मानक विचलन क्रमशः 3.452 एवं 3.855 है। गैर सरकारी

विद्यालय के छात्र एंव छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने पर ही ''टी मान'' 0.833 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक नही है। जिससे शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष निकलता है। कि सांख्यिकीय दृष्टि से गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. सरकारी विद्यालय के छात्रों की आकांक्षाओं का मध्यमान 22.28 है व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों की आकांक्षाओं का मध्यमान 22.6 प्राप्त हुआ। सरकारी एंव गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों की आकांक्षाओं का मानक विचलन क्रमशः 3.143 व 3.452 है। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों की आकांक्षाओं के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर ''टी मान'' 0. 613 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष प्राप्त हुआ है। कि सांख्यिकीय दृष्टि से सरकारी एव गैंर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। सरकारी एंव गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान क्रमशः 21.84 व 22.28 प्राप्त हुआ है। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं की सृजनात्मकता का मानक विचलन क्रमशः 4.017 एवं 3.855 है। सरकारी एंव गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने के लिए ''टी मान'' 0.090 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता के .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। जिससे निष्कर्ष प्राप्त हुआ है। कि सांख्यिकीय दृष्टि से सरकारी एव गैंर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

10 भावी शोध हेतु सुझाव

1. वर्तमान शोध अध्ययन में 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। इसलिए भावी शोध में अधिक न्यादर्श लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।

2. वर्तमान शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का ही चयन किया गया है अतः भावी शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी शामिल किया जा सकता है।

3. वर्तमान शोध में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अतः भावी अध्ययन में सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों पर भी ध्यान दिया जा सकता है।

4. प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्य केवल जयपुर जिले तक ही सीमित है। भावी अध्ययन अन्य जिलों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अलावा अन्य प्रभावी मनोवैज्ञानिक चरों को लेकर शोध कार्य किये जा सकते हैं।

6. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।

7. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यमों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

8. आकांक्षा की प्रकृति का बालक की सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।

11 शैक्षिक अभिप्रेतः–

बालक का संसार उनके घर तक सीमित होता है। वहीं उनमें सुदृढ़ विश्वास की भावना विकसित होती है। ''जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक जीवन वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है एवं उपलब्धियाँ प्राप्त करना पड़ता है। जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक भी है। कुछ समय उपरान्त बालक को अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण में जीवन–पर्यन्त उपलब्धियां प्राप्त करना पड़ता है।

बालक की आकांक्षायें धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनो प्रकार की हो सकती है। बालकों की आकांक्षाये बालकों में उपलब्धि की तुरन्त, आजकल के लिए भी होती है और कुछ ऐसी भी होती है जब बालक सोचता है कि जब बड़ा हो}गा तो मैं ऐसा करूंगा। उपलब्धि के लिए आकांक्षायें बालक शब्दों द्वारा व्यक्त भी कर

सकता है और व्यक्त ना करके गुप्त भी रख सकता है। उपलब्धि के लिए आकांक्षा पर वातावरण सम्बन्धि कारकों का अधिक प्रभाव पड़ता है तथा व्यक्तिगत कारकों का कम प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार आकांक्षायें यदि धनात्मक होती है तो बालक सामाजिक व व्यक्तिगत समायोजन अच्छा रहता है। बालक सृजनशील होता है। परन्तु यदि आकांक्षायें यदि ऋणात्मक होती हैं तो बालक व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन बिगड़ जाता है। बालक में सृजनात्मकता का विकास उस समय सामान्य और अच्छा होता है जब बालक में उपलब्धि के लिए आकांक्षायें धनात्मक होती है।